2 अक्तुबर 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस्

ज्ञान-

1] परमपिता परमात्मा तुम सबका बाप भी है और फिर नॉलेजफुल भी है। आत्मा में ही नॉलेज रहती है ना। तुम्हारी आत्मा संस्कार ले जाती है। बाप में तो पहले ही संस्कार हैं। वह बाप है, यह तो सब मानते भी हैं। फिर दूसरी उसमें खूबी है, जो उसमें ओरीज्नल नॉलेज है। बीजरूप है।

2] और कोई को फादर, टीचर, गुरू नहीं कहा जाता है। वह सबका सुप्रीम बाप भी है, टीचर, सतगुरू भी है। यह बातें भूलनी नहीं चाहिए। परन्तु बच्चे भूल जाते हैं क्योंकि नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार राजधानी स्थापन हो रही है।

3] वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी रिपीट का अर्थ ही हूबहू रिपीट। अभी तुम जानते हो हम फिर से सो देवी-देवता बन रहे हैं, वही फिर बनेंगे। इसमें ज़रा भी फर्क नहीं पड़ सकता है। यह सब समझने की बातें हैं।

4] बाप कहते हैं पास्ट बातें जो होकर गई हैं उनका बैठ लिखा है, उनको कहानियाँ कहेंगे। त्योहार आदि सब यहाँ के हैं। द्वापर से लेकर मनाते हैं। सतयुग में नहीं मनाये जाते। यह सब बुद्धि से समझने की बातें हैं। देह-अभिमान के कारण बच्चे बहुत प्वाइंटस् भूल जाते हैं। नॉलेज तो सहज है। 7 रोज़ में सारी नॉलेज धारण हो सकती हैं।

योग-

1] बच्चों को ही बाप को याद करना है। याद की सबजेक्ट ही डिफीकल्ट है। बाप योग और नॉलेज सिखाते हैं। नॉलेज तो बहुत सहज है। बाकी याद में ही फेल होते हैं। देह-अभिमान आ जाता है। फिर यह चाहिए, यह अच्छी चीज़ चाहिए। ऐसे-ऐसे ख्यालात आते हैं।

2] बाप कहते हैं– बच्चे, अपने को आत्मा समझ मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप कट जाएं। मूल बात ही यह है। याद से ताकत आयेगी। दिन-प्रतिदिन बैटरी भरती जायेगी क्योंकि ज्ञान की धारणा होती जाती है ना। तीर लगता जाता है।

धारणा-

1] मीठे बच्चे– सतगुरू की पहली-पहली श्रीमत है देही-अभिमानी बनो, देह-अभिमान छोड़ दो।

2] कई कहते हैं हमारी बुद्धि में नहीं बैठता, बाबा हमारा मुख खोलो, कृपा करो। बाप कहते हैं इसमें बाबा को तो कुछ करने की बात ही नहीं है। मुख्य बात है तुमको डायरेक्शन पर चलना है। बाप का ही राइट डायरेक्शन मिलता है, बाकी सब मनुष्यों के हैं रांग डायरेक्शन क्योंकि सबमें 5 विकार हैं ना। नीचे ही उतरते-उतरते रांग बनते जाते हैं।

3] पहले अटेन्शन चाहिए याद की यात्रा पर।

4] महान आत्मा अर्थात् सेन्ट कहेंगे जो व्यर्थ वा माया से इनोसेंट हो। जैसे देवतायें इससे इनोसेंट थे ऐसे अपने वो संस्कार इमर्ज करो, व्यर्थ के अविद्या स्वरूप बनो क्योंकि यह व्यर्थ का जोश कई बार सत्यता का होश, यथार्थता का होश समाप्त कर देता है। इसलिए समय, श्वास, बोल, कर्म, सबमें व्यर्थ से इनोसेंट बनो। जब व्यर्थ की अविद्या होगी तो दिव्यता स्वत: अनुभव होगी और अनुभव करायेगी।

5] फर्स्ट डिवीजन में आना है तो ब्रह्मा बाप के कदम पर कदम रखो।

...2

2 अक्तुबर 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस्

[2]

सेवा-

1] जैसे बाप तुमको बैठ समझाते हैं तुमको फिर औरों को समजाना है। बाप मनुष्य सृष्टि का बीजरूप है फिर वह सत है, चैतन्य है, नॉलेजफुल है, उनको सारे झाड़ की नॉलेज है। और कोई को भी इस झाड़ की नॉलेज है नहीं। इनका बीज हैं बाप, जिसको परमपिता परमात्मा कहा जाता है।

2] सीढ़ी के चित्र पर बहुत अच्छी रीति समझाना है और झाड़ पर भी समझाना है। कोई भी धर्म वाले को तुम दिखा सकते हो, तुम्हारा धर्म स्थापन करने वाला फलाने-फलाने समय पर आता है, क्राइस्ट फलाने टाइम आयेगा। जो और-और धर्मों में कनवर्ट हो गयें है उन्हों को यह धर्म ही अच्छा लगेगा, फट निकल आयेंगे। बाकी कोई को अच्छा नहीं लगेगा तो वह पुरूषार्थ ही कैसे करेंगे।

3] बोलो हम ब्रह्मा को भगवान वा देवता आदि कहते ही नहीं हैं। बाप ने बताया है बहुत जन्मों के अन्त में, वानप्रस्थ अवस्था में मैं इनमें प्रवेश करता हूँ सारे विश्व को पावन बनाने के लिए। झाड़ में भी दिखाओ, देखो एकदम पिछाड़ी में खड़ा है। अब तो सब तमोप्रधान जड़जड़ीभूत अवस्था में हैं ना। यह भी तमोप्रधान में खड़े हैं, वही फीचर्स हं। इसमें बाप प्रवेश इनका नाम ब्रह्मा रखते हैं। नहीं तो तुम बताओ ब्रह्मा का नाम कहाँ से आया? यह है पतित, वह है पतित। वह पावन देवता ही फिर 84 जन्म ले पतित मनुष्य बनते हैं। यह मनुष्य से देवता बनने वाला है। मनुष्य को देवता बनाना- यह बाप का ही काम है। यह सब बड़ी वन्डरफुल समझने की बाते हैं। यह, वह बनते हैं सेकेण्ड में, फिर वह 84 जन्म ले यह बनते हैं। इनमें बाप प्रवेश कर बैठ पढ़ाते हैं, तुम भी पढ़ते हो। इनका भी घराना है ना। लक्ष्मी-नारायण, राधे-कृष्ण के मन्दिर भी हैं। परन्तु यह किसको भी पता नहीं है, राधे-कृष्ण पहले प्रिन्स-पिन्सेज हैं जो फिर लक्ष्मी-नारायण बनते हैं। यह बेगर टू प्रिन्स बनेंगे। प्रिन्स सो बेगर बनते हैं। कितनी सहज बात है। 84 जन्मों की कहानी इन दोनों चित्रों में हैं। यह वह बनते हैं। युगल है इसलिए 4 भुजा देते हैं। प्रवृत्ति मार्ग है ना। एक सतगुरू ही तुम्हें पार ले जाते हैं। बाप कितना अच्छी रीति समझाते हैं फिर दैवीगुण भी चाहिए।